Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 13, Issue No. 2, July-2017, ISSN 2230-7540

वर्तमान में संस्कृत की उपयोगिता व वैज्ञानिकता

Dr. Kamlesh*

Assistant Professor, Sanskrit Life Chavan Women's College, Asandha (Karnal)

----------X----------

संस्कृत भारतीय भाषाओं का जीवन शक्ति स्त्रोत है। प्राचीन काल में भारत ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में विश्व गुरू था। यवनों तथा अंग्रेजों ने भारतीयों की शान्तिप्रियता के कारण भारत को गुलाम बनाकर इसका सर्वस्व नष्ट करने का यत्न किया। उन्होंने स्वार्थ सिद्धि के लिए संस्कृत के स्थान पर उर्दू और अंग्रेजी को बढ़ावा दिया और इससे भारत का पतन हो गया। एक समय ऐसा रहा कि भारत गुलाम हो गया। लेकिन भारत की संस्कृति ऐसी थी कि न जाने अनेकों शहीदों, समाज सुधारकों ने भारत में जागृति पैदा की और भारत माँ को गुलामी की जंजीरों से आजाद करवाया। आज उसी का दुष्परिणाम है कि महिला अपराध, भ्रष्टाचार और आतंकवाद बेरोजगारी ये समस्याएँ प्रमुख रूप से समाज को व्यथित कर रही हैं आज नैतिक शिक्षा संस्कृत शिक्षा के अभाव में ही हमारा भारतीय समाज अपनी आध्यात्मिक अवधारणा को धीरे–धीरे त्यागता जा रहा है और भौतिकवाद की ओर तेजी से अग्रसर हो रहा है।

वर्तमान समय में संस्कृत की आवश्यकता– 'भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृत संस्कृतिस्तथा इस उक्ति से ही भारतवर्ष की दो प्रतिष्ठाओं संस्कृत तथा संस्कृति के महत्व के विषय में अभिज्ञान हो जाता है। यह निर्विवाद सत्य ही है कि भारतीय संस्कृति की रक्षा संस्कृत के बिना असम्भव ही है। वर्तमान संस्कृत साहित्य के विद्वान् आचार्य डॉ॰ हरिनारायण दीक्षित ने अपनी कृति 'भारत माता बूते' महाकाव्य में लिखा है कि–

'रक्षितुं न च शक्यन्ते विना संस्कृतशिक्षणम्

सभ्यतासंस्कृति लोके भारतस्य च शेवीधः।

अर्थात् संस्कृत की शिक्षा के बिना समाज में भारतीय सभ्यता, भारतीय संस्कृति और भारतीय धरोहर की रक्षा नहीं की जा सकती।

एक विदेशी विद्वान् सर विलियम जोन्स ने सन् 1784 कलकत्ता के एक समारोह में कहा था कि अब मेरे हाथ में वह कुंजी आ गयी है, जिसके सहारे विश्व की सब भाषाओं के रहस्य लोगों को बता सकूंगा। यह कुंजी है संस्कृत भाषा।

अग्रतः संस्कृतमेऽस्तु पुरतो मेऽस्तु संस्कृतम्।

संस्कृतं हृदयेमेऽस्तु विश्वमध्येऽस्तु संस्कृतम्।।

संस्कृत की विशेषताएँ

संस्कृत विश्व की सबसे पुरानी पुस्तक (वेद की भाषा) है। इसलिए इसे विश्व की प्रथम भाषा मानने में किसी संशय की संभावना ही नहीं है। भारत में प्रतिवर्ष श्रावणी पूर्णिमा के पावन अवसर को संस्कृत दिवस के रूप में मनाया जाता हैं। श्रावण मास की पूर्णिमा को 1969 से संस्कृत दिवस की शुरूआत हुई है। संस्कृत आजीविका सम्बद्धता मानी जाती है। यह मानव के विकास का एकमात्र मार्ग है। यदि पाठ्यक्रम में सम्बन्धित विषयों के अंश निर्धारित हो तो अध्ययनरत छात्र अपने–अपने अतीत से गौरवान्वित होकर वर्तमान में संतुलित व्यवहारशील तथा भविष्य के प्रति उल्लसित होंगे। विश्व की प्रत्येक भाषा में 60 प्रतिशत शब्द संस्कृत भाषा से है। जर्मन, फ्रेंच एवं अंग्रेजी आदि भाषाओं में भी संस्कृत के तत्सम् तद्भव शब्दों की बड़ी संख्या है। अतः संस्कृत ज्ञान से विदेशी भाषाओं को सीखना सरल है और विदेशी भाषा ज्ञान आजीविका के लिए सहायक हो सकता है। संस्कृत भाषा का ज्ञान किसी भी भाषा में पत्रकारिता तथा संचार सेवाओं में सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध होता हैं। धर्म, संस्कृति, इतिहास और राष्ट्रभाषा का समृद्ध ज्ञान भारतीय प्रशासनिक सेवा जैसे महत्वपूर्ण पद पर पहुँचने के लिए आवश्यक हैं। महर्षि पाणिनि विरचित व्याकरण तथा देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, पाणिनि यास्क की बुद्धिमता चरक की चिकित्सा पद्धति सीधे आजीविका सम्बद्ध है। भौतिकता की होड़ से सांस्कृतिक प्रदूषण से बचने के लिए, मनोरोग तथा मानसिक अशान्ति से बचने के लिए उपाय संस्कृत, दर्शन ग्रंथों में निहित हैं। मन नियंत्रण से विश्व विजय होती है। ऐलोपैथी के दुष्प्रभावों के कारण भारतीय आयुर्वेद व योग भी विश्व में लोकप्रिय हो रहे है।

संस्कृत से सुसंस्कृत समाज का निर्माण होता है, जैसे वैदिक संस्कृति में गर्भ से पंचतत्व विलय पर्यन्त षोड्श संस्कार का विधान हैं। संस्कार से शरीर, मन पवित्र होता है। पर्यावरण शुद्ध होता है, बल्कि संस्कार केवल औपचारिकता न समझकर उनके वैज्ञानिक महत्व है। जिस प्रकार उदर के लिए भोजन की, नैतिक मूल्यों से ही मानव अपनी सभ्यता का परिचय देता है। उसी प्रकार न जाने संस्कृत साहित्य में ऐसे श्लोकों की भरमार है, जो मनुष्य की सभी समस्याओं का समाधान करता है, जैसे–

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।

आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः।।

www.ignited.in

इसी प्रकार 'सर्व भवन्तु सुखिनः' 'वसुधैव कुटुम्बकम्' 'असतो मा सद्गमय', 'स्वस्ति पन्यामनुचरेम्', 'सा विद्या या विमुक्त्ये', 'सत्यमेव जयते', 'विद्यामृतमनुष्यते' इत्यादि उदात्त भाषाओं से राष्ट्र का निर्माण होता हैं। यह भाषा देश को विश्वगुरू तथा भारत को सोने की चिड़िया कहलाने के नाम से जानी जाती है। कुछ व्यक्ति इसे मृत भाषा मानते है। वे नहीं जानते कि संस्कृत का विरोध करना अपनी भोजन थाली में छिद्र करने के समान प्रतीत होता है।

अगर यदि हम यह माने की संस्कृत ज्योतिषियों की ही भाषा होती तो क्या विदेशी प्राच्यविद् इसके ग्रंथों का अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं में अनुवाद न करते, वह भी ब्रिटिश शासन काल में कुछ उल्लेख अनुवाद निम्नानुसार हैं–

	प्राच्यविद्	अनुवादित पुस्तकें तथा वर्ष
1.	सर विलियम जोन्स	अभिज्ञान शाकुन्तलम्, 1970
		गीत गोविन्द, मनुस्मृति, 1794
2	चार्ल्स विलकिन्स	भगवद्गीता, 1785
		हितोपदेश, 1787
3	एच॰एच॰ विल्सन	विष्णुपुराण तथा ऋग्वेद
4.	थियोंडर बैनके	सामवेद, 1848
5	फ्रैड्रिक मैक्समूलर	ऋग्वेद, 1849
6	विटनी तथा रूडोलस रोथ	अथर्ववेद 1856

उदाहरण तो अनेक है इन विदेशी विद्वानों ने यूरोप में संस्कृत का अध्ययन प्रारम्भ कराया। जर्मनी के मैक्समूलर तथा अन्य विद्वानों के प्रयत्नों से ही विश्व में प्रथम बार चारों वेदों का छपा हुआ संस्करण निकाला गया। वे अनेक यूरोपीय तथा जर्मन भाषाओं व उद्गम संस्कृत से ही मानते थे। संस्कृत केवल आध्यात्मिक ग्रंथों का ही लेखन नहीं है, अपितु चिकित्सा क्षेत्र चाक तथा सुश्रुत संहिता, राजनीतिशास्त्र के क्षेत्र में कौटिल्य का अर्थशास्त्र, गणित तथा खगोलशास्त्र के क्षेत्र में आर्यभट्टिका तथा लीलावती जैसे उल्लेखनीय ग्रंथों का लेखन इसी भाषा में हुआ है।

इसी क्रम से जब गत मास में केन्द्र सरकार ने केन्द्रीय विद्यालयों में जर्मन के स्थान पर संस्कृत पढ़ाने का आदेश दिया तो देश के कुछ तथाकथित धर्म निरपेक्ष बन्धुओं ने इस सम्बद्ध भाषा का अपनेराजनीतिक व्यक्तिगत निहित स्वार्थी के लिए विरोध करना ही उचित समझा तथा साथ ही इन्होंने अगस्त 2014 में संस्कृत सप्ताह के आयोजन का भी विरोध किया, लेकिन अन्ततः संस्कृत की अनिवार्यता पर सर्वोच्च न्यायालय ने भी अपनी पूर्ण सहमति दी। ससाथ ही स्पष्ट भी कर दिया कि देश के लिए सभ्यता, संस्कृति, परम्परा की रक्षा के लिए संस्कृत वाङ्मय में निहित ज्ञान–विज्ञान को जानने के लिए संस्कृत भाषा आवश्यकीय है तथा सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश 'दवे' ने तो यहाँ तक कह दिया कि मेरे बच्चे यदि संस्कृत का अध्ययन करें तो मुझे प्रचुर हर्ष की अनुभूति होगी। उन्होंने एक समारोह में संस्कृत की अमूल्य विरासत श्रीमद्भगवद् गीता को अनिवार्य रूप से पढ़ाने की भी वकालत की थी। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 के तहत् भी राजभाषा हिन्दी की अभिवृद्धि के लिए संस्कृत को प्रोन्नत करना अनिवार्य बताया है और इस सम्बद्ध देवभाषा संस्कृत के महत्व का ही प्रभाव परिलक्षित होता है कि शिक्षा नीति निर्माताओं ने देश की दो महत्वपूर्ण शिक्षा नीतियों सन् 1968 तथा 1986 में संस्कृत को अनिवार्य रूप से रखा था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के हिन्दुस्तान के प्रत्येक विद्यार्थी को अनिवार्य रूप से संस्कृत पढ़ने की सलाह दी थी। भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने मुक्त कंठ से संस्कृत भाषा और संस्कृत के वाङ्मय को देश की विरासत के रूप में घोषित कर दिया था। इस भाषा की वैज्ञानिकता का अध्ययन करके ही अनुसंधान संस्था नासा ने 1987 ई॰ में ही संस्कृत को कम्प्यूटर के लिए सर्वोत्तम भाषा घोषित कर दिया था, जिस कारण आज उस संस्था के द्वारा संस्कृत में सतत् शोध किए जा रहे हैं। पाश्चात्य भाषा वैज्ञानिकों ने पाणिनि व्याकरण को 'Best Creation of Human Intelligence' में कहा है अगर किसी वैज्ञानिक को समुचित रूप से विधान को जानना है तो वह 'Science in Sanskrit' और 'Pride of India' नाम पुस्तकों का अध्ययन करें।

आज भी अमेरिका जर्मनी आदि अनेक देशों में संस्कृत के क्षेत्र में सतत् उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य करके इसकी श्रीवृद्धि में प्रयत्नशील है।

संस्कृत के बारे में कुछ महत्वपूर्ण संदेश

1. नासा वैज्ञानिकों की एक रिपोर्ट के संस्थान छठवीं–सातवीं पीढ़ी के सुपर कम्प्यूटर संस्कृत भाषा पर आधारित बना रहा है। जिससे सुपर कम्प्यूटर अपनी अधिकतम सीमा का उपयोग किया जा सके। परियोजना की समय सीमा 2025, 2034 ई॰ है, इसके बाद मुमकिन है कि दुनिया भर में संस्कृत सीखने के लिए भाषा क्रांति हो।

2. नासा के पास 60,000 ताड़ के पत्ते की पांडुलिपियां है। इनके अध्ययन के नए–नए निष्कर्ष सामने आ रहे हैं। इनमें पाणिनि के माहेश्वर सूत्र के अनुसार कम्प्यूटर प्रोगामिंग में काफी कामयाबी मिली है।

3. फोर्ब्स पत्रिका 1987 के संदर्भ में कम्प्यूटर में प्रयोग के लिए संस्कृत सबसे अच्छी भाषा हैं।

4. सबसे अच्छे प्रकार का कैलेंडर जो इस्तेमाल किया जा रहा है, हिन्दू कलैन्डर है। (जिसमें नया साल सौर–प्रणाली के भू–वैज्ञानिक परिवर्तन के साथ शुरू होता है। (संदर्भ जर्मन स्टेट युनिवर्सिटी)

5. दुनिया की सभी भाषाओं (97) प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस भाषा से प्रभावित हैं। (संदर्भ यूनेस्को की वार्षिक रिपोर्ट 2004)

6. विश्व स्वास्थ्य संगठन के डॉ॰ लॉरेन हेस्टिंगज के अनुसार संस्कृत का उपयोग इलाज में भी किया जा सकता है। अर्थात् संस्कृत में बात करने से व्यक्ति को ब्लड प्रेशर मधुमेह, मस्तिष्क रोग से जूझने में सहायता मिलती है। कोलेस्ट्रोल कम होने के तो प्रमाण भी मिले है। संस्कृत में बात करने से तंत्रिका तंत्र सक्रिय रहता हैं।

7. संस्कृत वह भाषा है जो अपनी पुस्तकों वेद, उपनिषदों, श्रुतिस्मृति, पुराणों, महाभारत, रामायण आदि में सबसे

उन्नत प्रौद्योगिकी रखती है। (संदर्भ रशियन स्टेट युनिवर्सिटी)

8. दुनिया में अनुवाद के उद्देश्य के लिए उपलब्ध सबसे अच्छी भाषा संस्कृत हैं (संदर्भ फोर्ब्स पत्रिका, 1985)

9. संस्कृत भाषा वर्तमान में 'उन्नत किर्लियन फोटोग्राफी तकनीक में प्रयोग की जा रही है। यह उन्नत फोटोग्राफी तकनीक केवल रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका में ही मौजूद है।

10. अमेरिका, रूस, स्वीडन, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान और आस्ट्रिया वर्तमान में भरतनाट्यम और नटराज के महत्व के बारे में शोध कर रहे हैं। (नटराज शिव जी का कास्मिक नृत्य है। जैनेवा में संयुक्त राष्ट्र कार्यालय के सामने शिव या नटराज की मूर्ति है।

11. ब्रिटेन वर्तमान में हमारे श्रीचक्र पर आधारित एक राष्ट्र प्रणाली पर शोध कर रहा है।

12. अमेरिका की सबसे बड़ी संस्था NASA (National Aeronautics Space Administtration) ने संस्कृत भाषा को अंतरिक्ष में कोई भी मैसेज भेजने के लिए सबसे उपयोगी दावा माना हैं। नासा के वैज्ञानिकों की माने तो जब वह रचेस ट्रैवलर्स को मैसेज भेजते थे तो उनको वाक्य उल्टे हो जाते थे। इस वजह से मैसेज का अर्थ ही बदल जाता था। उन्होंने दुनिया के कई भाषा में प्रयोग किया, लेकिन हर बार यही समस्या आई। आखिर में उन्होंने संस्कृत में मैसेज भेजा क्योंकि संस्कृत के वाक्य उल्टे हो जाने पर भी अपना अर्थ नहीं बदलते है। यह रोचक जानकारी हाल ही में एक समारोह में दिल्ली सरकार के प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के निदेशक डॉ॰ जीतराम भट्ट ने दी।

13. एक नई खोज के अनुसार संयुक्त राष्ट्र का चार्टर का अब संस्कृत भाषा में अनुवाद किया गया है। यह चार्टर संयुक्त राष्ट्र की बुनियादी संधि है और यह जानकारी संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि सैयद अकबरूद्दीन ने टविटर के जरिये दी।

निष्कर्ष

संस्कृत में इतनी वैज्ञानिकता होने के कारण ही अमेरिका, रूस, स्वीडन, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान, आस्ट्रिया देशों में नर्सरी से ही बच्चों को संस्कृत पढ़ाई जाने लगी है। कहीं ऐसा न हो कि हमारी संस्कृत कल वैश्विक भाषा बन गये और हमारे नवयुवक या नेता संस्कृत को तुच्छ या मृत भाषा का दर्जा देकर उस पर केवल थोड़े और भद्दे मसखरों की भाषा समझते रहे और हमारी ही संस्कृत संस्कृति का पीछा करके अन्य देश हम से आगे निकल जाये। अपने इस लेख से मैं भारत के युवाओं का आह्वान करती हूँ, कि आने वाले समय में संस्कृत कम्प्यूटर की भाषा बनने जा रही है। सन् 2025 तक नासा ने संस्कृत में कार्य करने का लक्ष्य रखा हैं। अतः अंग्रेजी भाषा के साथ–साथ वे अपने बच्चों को संस्कृत का ज्ञान अवश्य दिलाएं और संस्कृत को भारत में उपहास का कारण न बनाये, क्योंकि संस्कृत हमारी देवभाषा है। संस्कृत का उपहास करके हम अपनी जननी अपनी सभ्यता संस्कृति का उपहास कर रहे है।

Corresponding Author

Dr. Kamlesh*

Assistant Professor, Sanskrit Life Chavan Women's College, Asandha (Karnal)

E-Mail – kamal4u2016@gmail.com